हरी खाद का प्रयोग -

- गन्ने की बुआई से पूर्व हरी खाद जमीन में मिलाकर भूमि की उर्वरा शक्ति एवं उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।
- हरी खाद के लिये फसल - सन अथवा ढैंचा जून/जुलाई माह में लें।
- बीज की मात्रा 25 कि0ग्रा0 प्रति एकड़ रखें।
- प्रति एकड़ 8-10 टन हरी खाद की उपलब्धता रहती है।
- प्रति एकड़ नाइट्रोजन 30 कि0ग्रा0 फास्फोरस 10 कि0ग्रा0 तथा पोटाश 20 कि0ग्रा0 सुरक्षित होता है।
- जमीन की भौतिक, रसायनिक व जैविक उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। खरपतवार का प्रकोप कम होता है।
- भूमि में जैविक पदार्थ की मात्रा में वृद्धि होती है।
- यदि खरीफ में हरी खाद लेना संभव न हो तो गन्ने की दो कतारों के बीच भी हरी खाद उगाई जा सकती है।

कल्लों की संख्या का निर्धारण :-

प्रति एकड़ 40-45 हजार गन्नों की संख्या रखने के लिये भारी मिट्टी चढ़ाते समय अनुपयोगी कल्ले व सूखी पत्तियाँ निकाल कर नाली में डालें। सूखी पतित्याँ नाली में डालने से खरपतवार का नियंत्रण होता है। साथ ही जमीन मे नमी बनी रहती है तथा भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है।

मिट्टी चढ़ाते समय

कल्लों की संख्या निम्नानुसार रखें -

दो पक्तियों की आपस दूरी/विधि	प्रति 10 फीट/पौधों की संख्या
3 फीट	50 गन्नें
4 फीट	55 गन्नें
2 : 4 : 2 फीट (दोहरी पंक्ति)	80 - 100 प्रति जोड़ी पंक्ति